❁ 19 अगस्त 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❁

✺ ज्ञान-

1] रूहानी बाप का मुख्य कर्तव्य है पतितों को पावन बनना। बाप को पावन बनाने में ही बहुत मजा आता है। बाप आते ही हैं बच्चों की सद्गति करने, सबको सतोप्रधान बनाने क्योंकि अब घर जाना है।

2] तुम जानते हो सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने में कितने जन्म लगे हैं? 63 जन्म नहीं कहेंगे। 84 जन्म लगे हैं। यह तो निश्चय है ना हम सतोप्रबाध थे, स्वर्गवासी अर्थात् सुखधाम के मालिक थे। सुखधाम था जिसको ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है। थे वह भी मनुष्य, सिर्फ दैवीगुण वाले थे। इस समय हैं आसुरी गुण वाले मनुष्य।

3] द्वापर के राजायें भी अपवित्र थे, रत्नजड़ित ताज था, लाइट का नही अर्थात् पवित्रता नहीं थी।

4] तो बाप भी कहते हैं तुमको यह लक्ष्मी-नारायण बनना है। एम ऑबजेक्ट तो सामने खड़ा है। यह है आदि सनात देवी-देवता धर्म। बाकी हिन्दू धर्म तो कोई धर्म है नहीं। हिन्दू तो हिन्दुस्तान का नाम है। जैसे सन्यासी ब्रह्म अर्थात् रहने के स्थान को भगवान् कहत देते हैं। वैसे यह फिर रहने के स्थान को अपना धर्म कह देते हैं, आदि सनातन कोई हिन्दू धर्म थोड़ेही था। हिन्दू तो देवताओं के आगे जाकर उनको नमन करते हैं, महिमा गाते हैं जो देवता थे, वही हिन्दू बन गये। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्य हो गये हैं। और सभी धर्म कायम हैं, यह देवता धर्म ही प्राय: लोप है। आपेही पूज्य थे फिर पुजारी बन देवताओं की पूजा करते हैं। कितना समझाना पड़ता है। कृष्ण के लिए भी कितना समझाते हैं। यह स्वर्ग का पहला प्रिन्स है तो अब 84 जन्म भी शुरू उनसे होंगे। बाप कहते हैं बहुत जन्मों के अन्त के भी अन्त में मैं प्रवेश करता हूँ। तो उसका जरूर हिसाब तो बतायेंगे ना। यह लक्ष्मी-नारायण भी नम्बरवन में आये थे। तो जो पहले हैं वही फिर लास्ट में जायेंगे। सिर्फ एक कृष्ण तो नहीं था ना, और भी तो विष्णु वंशावली थे। इन बातों को तुम अच्छी रीति जानते हो। यह फिर भूल नही जाना है।

5] पहले भाई-भाई थे, फिर बाप आते हैं तो भाई-बहन बनते हैं। फिर तुम सतयुग में आते हो। तो वहाँ परिवार और बड़ा होता है। वहाँ भी शादी होती है तो परिवार और वृद्धि को पाता है। घर अर्थात् शान्तिधाम में रहते हैं तो हम भाई हैं, एक बाप है। फिर यहाँ प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान भाई-बहन हैं और कोई नाता नहीं हैं, फिर रावण राज्य में बहुत वृद्धि होती जाती है।

6] शक्तिशाली आत्मा वह है जो दृढ़ता की शक्ति द्वारा सेकण्ड से भी कम समय में व्यर्थ को समाप्त कर दे। शुद्ध संकल्प की शक्ति को पहचानो, एक शुद्ध वा शक्तिशाली संकल्प बहुत कमाल कर सकता है। सिर्फ कोई भी दृढ़ संकल्प करो तो दृढ़ता सफलता को लायेगी। सबके लिए शुद्ध संकल्पों का बंधन, घेराव ऐसा बांधो जो कोई थोड़ा कमजोर भी हो, उनके लिए भी यह घेराव एक छत्रछाया बन जाए, सेफ्टी का साधन वा किला बन जाए।

✺ योग-

1] मीठे बच्चे– बड़ा बाबा तुम बड़े आदमियों को ज्यादा मेहनत नहीं देते, सिर्फ दो अक्षर याद करो अल्फ और बे।

2] बाप को भी मजा आता है तुम बच्चों को पवित्र बनाने में इसलिए कहते हैं पतित-पावन बाप को याद करो। सर्व का सद्गति दाता वह एक ही बाप है, और कोइ है नहीं। यह भी तुम समझते हो कि अब घर जाना है जरूर। पुरूषार्थ ज्यादा करने के लिए बाप कहते हैं याद की यात्रा जरूरी है। याद से ही पावन बनेंगे फिर है पढ़ाई। पहले अल्फ बाप को याद करो, पीछे यह बादशाही, जिसके लिए तुमको डायरेक्शन देते है।

...2

3] याद की यात्रा से तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के सब विकर्म विनाश होने हैं।

4] बाप देखो कितना सिम्पुल बताते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, उठते-बैठते तुम सिर्फ मामेकम् याद करो। मैं ऊंच ते ऊंच सभी आत्माओं का बाप हूँ। तुम जानते हो हम सब ब्रदर्स हैं, वह बाप है। हम सभी ब्रदर्स एक बाप को याद करते हैं।

5] बाप सब राज़ समझाते रहते हैं फिर भी कहते हैं– मीठे-मीठे बच्चों, बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा उतर जायेगा। पढ़ाई से पाप नहीं कटेंगे। बाप की याद ही मुख्य है।

✹ धारणा-

1] सिर्फ एक पाठ पक्का करो– हम देह नहीं आत्मा हैं। इसी पाठ से बाप की याद रहेगी और पावन बनेंगे।

2] अभी तो पवित्र बनो तब ही नई दुनिया में आयेंगे और राज्य करने के लायक बनेंगे। सबको पावन बनना ही है, वहाँ पतित होते ही नहीं। जो अभी सतोप्रधान बनने का पुरूषार्थ करते हैं, वही पावन दुनिया के मालिक बनेंगे। मूल बात ही एक है। बाप को याद करने से सतोप्रधान बनना है। बाप कोई ज्यादा मेहनत नहीं देते हैं। सिर्फ कहते हैं अपने को आत्मा समझो। बार-बार कहते हैं पहले यह पाठ पक्का करो– हम देह नहीं, हम आत्मा हैं।

✹ सेवा-

1] सर्विस करना तो सहज है। म्यूज़ियम में तुम किस रीति समझातो हो, उससे हर एक की पढ़ाई का मालूम पड़ जाता है। हेड टीचर देखेगा कि यह ठीक नहीं समझाते हैं तो खुद जाकर समझायेंगे, आकर मदद करेंगे। एक-दो गार्ड रखे जाते हैं, जो देखते हैं यह ठीक समझाते हैं? कोई कुछ पूछता है तो मूंझ तो नहीं जाते? यह भी समझते हैं, सेन्टर की सर्विस से प्रदर्शनी की सर्विस अच्छी होती है। प्रदर्शनी से म्युजियम में अच्छी होती है। म्युजियम में शो करते हैं अच्छी तरह से, फिर जो देखकर जाते हैं औरों को सुनाते रहेंगे। यह तो पिछाड़ी तक चलता रहेगा।